डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर

बीए प्रथम वर्ष

द्वितीय पत्र प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

कबीर की दार्शनिकता

कबीर का दर्शन भी उनके जीवन के अनुभवों से ही निर्मित है। उन्होंने अलग – अलग स्थानों से, मतों से दार्शनिकता को ग्रहण किया है। विभिन्न संतों के साथ रहकर भी उन्होंने अनेक दर्शनों से स्वयं को जोड़ा। उन्होंने कभी अद्वैतवादियों के मत को अपनाया, कभी एकेश्वरवाद को। इन अलग अलग मतों को अपनाते हुए उन्होंने जीवन-अनुभवों की कसौटी पर चिंतन – मनन किया। इस प्रकार उनकी अपनी दार्शनिकता विकसित हुई। उन्होंने अपनी दार्शनिकता को अनेक स्थानों पर व्यक्त किया है –

“तुम जिनि जानौ गीत है यहु निज ब्रम्ह विचार

कबिरा कहि समझाइया आतम जीवन सार।।“

कबीर ने ब्रम्ह ज्ञान को अत्यंत सरल शब्दों में प्रकट कर दिया है।

दर्शन संबंधी उनके प्रमुख विषय हैं – ब्रम्ह, जीव, जगत और माया।

कबीर ब्रम्ह को निराकार मानते हैं। उनका ब्रम्ह निर्गुण, निराकार, अजन्मा, अविगत और अदृश्य हैं। ब्रम्ह के लिए कबीर ईश्वर और राम शब्दों का भी प्रयोग करते हैं। जीव को उस परम ब्रम्ह का अंश मानते हैं। कबीर के राम ने दशरथ के पुत्र नहीं हैं। उन्होंने ब्रम्ह को निर्गुण माना है। निर्गुण ब्रम्ह अवतार नहीं लेता है –

“दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना।

राम नाम का मरम है आना।।“

कबीर ब्रम्ह को अवतार और लीला से भिन्न मानते हैं। वास्तव में यही निर्गुण ब्रम्ह की विशेषता भी है कि वह न अवतार लेता है और न ही लीला करता है। कबीर के राम निर्गुण ब्रम्ह हैं, इसलिए न तो उन्होंने दशरथ के यहाँ अवतार लिया है और न ही लंका के रावण को मारा है –

“न दशरथ घर औतरि आवा, न लंका का राव सतावा।

कबीर के ब्रम्ह शरीर धारण नहीं करते हैं। अंग – प्रत्यंगों से रहित हैं। वो ब्रम्ह तो एक अनुपम तत्व हैं, जो पुष्प की सुगंध से भी सूक्ष्म हैं। -

" जाके मुख माथा नहीं, नाही रूप कुरूप।

पुहुप वास ते पातरा, ऐसा तत्व अनूप।।"

ब्रम्ह ऐसा परम अनुपम सूक्ष्म तत्व है कि उसकी उपस्थिति की अनुभूति ही की जा सकती है, उसे शब्दों में व्यक्त करना संभव नहीं है –

"हाँ कहूँ तो है नहीं, न कहूँ तो है।

है नाही के बीच में जो कुछ है सो है।।"

आत्मा संबंधी विचारों को भी कबीर ने अपनी उक्तियों में प्रकट किया है। आत्मा शब्द का वैदिक साहित्य में सर्वप्रथम प्रयोग किया गया है। उपनिषदों में आत्मा को परम तत्व माना गया है। कबीर का विश्वास है कि आत्मा परमात्मा का ही अंश है –

"कहै कबीर इहु रामु को अंसु।

जस कागद पर मिटै न मंसु।।"

कबीर आत्मा और परमात्मा को अभिन्न मानते हैं। परमात्मा अमर है इसलिए वे आत्मा को भी अमर मानते हैं –

"हम न मरब मरिहैं संसारा"

आत्मा के लिए कबीर जीव, आत्मा और मन आदि शब्दों का प्रयोग करते हैं। आत्मा तो परमात्मा का अंश है, इसलिए आत्मा सदैव परमात्मा से मिलने की प्रतीक्षा करती है। मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह आत्मसाक्षात्कार करे। अपनी आत्मा को पहचाने -

" ता मन कौं खोजहु रे भाई, तन छूटे मन कहाँ समाई।

अकल निरंजन सकल सरीरा, ता मन सौं मिलि रहा कबीरा।।"

कबीर ब्रम्ह को सत्य और जगत को मिथ्या मानते हैं। कबीर शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन के मत को मुख्यतः मानते हैं। इस नश्वर संसार से मनुष्य की मुक्ति राम नाम के सहारे ही संभव है, ऐसा कबीर का मानना है -

"यह संसार सकल है मैला राम कहे ते सूंचा।

कहत कबीर नांव नहि छाड़ो गिरत परत चढ़ि ऊंचा।।"

कबीर ने अपनी दार्शनिकता में माया संबंधी विचार भी व्यक्त किये हैं। 'माया' शब्द का अर्थ है –

मा याति अर्थात जो जाती नहीं वह माया है। माया का दूसरा अर्थ है – अविद्या, अज्ञान आदि। कबीर ने माया को ठगिनी बताया है –

"माया महा ठगिनि हम जानी।

तिरगुन फांस लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी।।"

मोक्ष को कबीर जीवन का लक्ष्य मानते हैं। मोक्ष के लिए उन्होंने निर्वाण, मुक्ति, परमपद, अभयपद आदि नाम दिए हैं। उनके अनुसार मुक्ति सभी प्रकार के बंधनों से छुटकारा मिलने की अवस्था है। गुरु – महिमा, सत्संग एवं नाम स्मरण को कबीर ने अत्यधिक महत्व दिया है।